शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में प्रकृति के विविध भाव बोध

प्रणव शर्मा (शोधार्थी)
डॉ. कैलाश शर्मा (शोध निर्देशक)
डॉ. बलजीत कौर (सह शोध निर्देशक)
शासकीय विश्व विश्वनाथ यादव तामस्कर
स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

अनादि काल से ही मानव और प्रकृति का विशिष्ट संबंध रहा है। प्रकृति की गोद में ही मनुष्य ने छोटेबड़े सभी प्रकार के विकास किये हैं। साहित्य के क्षेत्र में भी दुनियाभर के साहित्य में प्रकृति किसी न किसी रूप में व्यक्त होती रही है। हिंदी कवियों को भी प्रकृति हमेशा से ही आकर्षित करती रही है। हिंदी काव्य में आदिकाल से प्रकृति को विषय बनाकर रचनाएं करने की परम्परा रही है। यह परम्परा आदिकाल से होते हुए आधुनिक काल तक पहुंची। आधुनिक काल में छायावाद के कवियों में भी प्रकृति से अटूट तादात्म देखने को मिलता है। छायावाद के बाद हिंदी काव्य में विभिन्न धारा का प्रसार हुआ। नये कवि नये विषयों पर लिखने लगे लेकिन काव्य में प्रकृति की महत्ता बनी रही। उन कवियों में से ही एक कवि भवानी प्रसाद मिश्र रहे हैं। नर्मदा के समीप जन्मे और विंध्यांचल की घनी वादियों के बीच पले-बढे। उनके प्रकृति से लगाव को उनकी कविताओं को पढ़कर अनुभव किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में निहित प्रकृति के विविध भाव बोध पर विचार किया गया है।

भूमिका

प्रकृति का अर्थ सरल शब्दों में जो हमारे चारों ओर व्याप्त वातावरण से है। इस वातावरण में हमारे समक्ष उपस्थित पेड़.पौधे, झरने, पहाड़, नदियां आदि जो साहित्यकारों को साहित्य सर्जन के लिए सदैव से ही प्रेरणा देती रही हैं। प्रकृति का एक अर्थ स्वभाव से भी लिया जाता है जो प्रस्तुत शोध पत्र के विषय से इतर है। जो प्रकृति इस शोध पत्र का मूल विषय है उस प्रकृति का होना हमारा होना है। इस प्रकृति में ही हम साँस लेते हैं। इस पर हमारी निर्भरता है। प्रकृति का उल्लेख समय-समय पर विविध रूप से साहित्य में होता रहा है। भारत में वैदिक काल से प्रकृति को दैवीय रूप में पूजा गया। यहां की नदियों को देवी और माता का दर्जा दिया गया है। हिमालय और विंध्याचल जैसे प्राचीन पर्वतों का मानवीकरण साहित्य में देखा जा सकता है। रीतिकाल में विभिन्न कवि आलंबन और उद्दीपन रूप में प्रकृति का सहारा लेते रहे हैं। षड्ऋतु वर्णन हो या बारहमासा पात्रों के संयोग-वियोग का चित्रण प्रकृति के माध्यम से किया गया है। और यह केवल रीतिकाल तक ही नहीं आगे बढ़ते हुए छायावादी कवियों के द्वारा भी प्रकृति को कविता में महत्व देना स्पष्ट देखा जा सकता है। सुमित्रानंदन पन्त, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा आदि सभी दिग्गज कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के माध्यम

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

से अपने भाव प्रकट किये। प्रकृति के लिए भाव विभोर होकर ही महादेवी वर्मा ने कहा :

"इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंकों में भर विशाल
झुक सस्मित शीतल चुम्बन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल
दुलरा दे ना बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास।"1

महादेवी वर्मा ने प्रकृति को जगती का आधार और स्वयं विराट जगती भी कहा है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में प्रकृति मानव जीवन का आधार प्रतीत होती है। प्रकृति के द्वारा मनुष्य ने जीवन के सौन्दर्य-बोध को जाना है। और कवियों ने उसी सौन्दर्य से प्रभावित होकर अप्रतिम रचनाएं की हैं।

प्रकृति हमें केवल सौन्दर्य से ही परिचित नहीं कराती। वह हमारे व्यक्तित्व को व्यापकता और गहराई देने का भी कार्य करती है। आलोचक नामवर सिंह ने अपने निबंध 'छायावाद' में प्रकृति-प्रेम का संबंध किस प्रकार वैयक्तिक विकास और सामाजिक स्वाधीनता से है, इस पहलू पर रोचक चर्चा की है। "पुरानी समाज व्यवस्था के घुटते हुए वातावरण की अपेक्षा आधुनिक युवक को फ्रकृति के बीच खुला वातावरण मिला, प्रकृति के राज्य में उसे पशु-पक्षियों, नदी-नालों, हवा और बादल सबमें उन्मुक्त और निरंकुश स्वच्छंदता के दर्शन हुए। इस स्वाधीनता की टोह में आधुनिक कवि प्रकृति के क्षेत्र में आयाश।"2

पुरानी संकुचित मानसिकता और जीवन जीने के मापदंडों ने नए आदमी को प्रकृति की ओर धकेला है। नया मानव पुराने रुढियों में बंधा नहीं रह सकता था। मानव के पुराने बंधे हुए व्यक्तित्व को प्रकृति ने ही नया आयाम दिया है। प्रकृति के समीप रहकर उसने अपने व्यक्तित्व को खंगाला और खुद को जानने की ओर कदम बढ़ाया। प्रकृति से जुड़ा भाव.बोध कवियों के लिए प्रेरणा का कार्य करता है और वही बोध कवियों की रचनाओं में देखने को मिलता है।

भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में प्रकृति

कवि भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में सदैव से प्राकतिक भाव.बोध एक मुख्य विषय रहा है। उन्होंने बोल-चाल की भाषा को प्राथमिकता देते हुए प्रकृति को अपनी रचनाओं में बराबर स्थान दिया। उनका प्रारंभिक जीवन प्रकृति की गोद में ही बीता। जिसके गवाह नर्मदा नदी के तट, वहां के झरने और विस्तृत वन हैं। जिनके आसपास उन्होंने प्रकृति के विस्तार को देखा और अन्तर्भूत किया। "मैंने हमेशा फूल, सुगंध, नदी से प्यार किया है और प्यार प्रकृति ही मेरी कविता है।"3

उन्होंने प्रकृति के सानिध्य में जो कुछ भी अनुभव किया उसे शब्द देने की कोशिश की। वे शब्दों से जैसे बिम्ब खड़े करते हैं उससे ज्ञात होता है कि प्रकृति के करीब रहकर उन्होंने उसके अद्भुत शांति का पान किया है। 'सतपुड़ा के घने जंगल' में प्रकृति स्वयं उतर कर उनकी कविताओं में सदृश्य आ गयी है :

सतपुड़ा के घने जंगल।
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।"
झाड़ ऊँचे और नीचे
चुप खड़े हैं आँख मीचे
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।"4

यहां वनों का सुस्पष्ट मानवीकरण देखने को मिलता है। हालांकि मानवीकरण की बात पर कवि के विचार कुछ अलग हैं। वे प्रकृति को मानव से अलग नहीं मानते। उनके लिए सब एक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समष्टि का रूप हैं और एक स्तर पर एक ही हैं। "मानवीकरण को मैं प्रकृति का मानवीकरण नहीं मानता। उसे मानव मानता हूँ, व्यक्ति मानता हूं। कई बार प्रकृति को मैं मानव से भी श्रेष्ट कला मानता हूँ।"5 ऐसी समझ कवि को तभी हो सकती है जब प्रकृति की सुगंध उसके अंतःकरण में रच-बस गई हो। इस अनुभूति का ही असर है जो उनकी रचना में वर्णित पंछियों के झुण्ड आकाश पर सदृश्य लगने लगते हैं। चारो ओर फैले लम्बे सघन वन और उन्ही के बीच से धरती पर उछल-कूद करते हुए गुजरते हिरणों का जत्था दिखता है। रातों में चंद्रमा की चमकदार किरणों से ढंका हुआ दृश्य मनोरम लगने लगता है। वनों की बात करते हुए वे बीहड़ों में बसे गोंड आदिवासियों का दृश्य देते हैं जो मुर्गों और तीतरों का पालन करते हुए बिना किसी चिंता के घास.फूस की झोपड़ियों में निवासरत हैं :

इन वनों के खूब भीतरए
चार मुर्गे, चार तीतर
पाल कर निश्चिन्त बैठे
विजनवन के बीच बैठेए
झोपड़ी पर फूस डाले
गोंड़ तगड़े और काले।"5

मनुष्य और प्रकृति में किसी भी प्रकार का अलगाव नहीं रहा। ऋतुओं के परिवर्तन के साथ विभिन्न त्योहारों का संबंध जोड़ा जाता है। पतझड़ के बाद बसंत का आना सूखे-मुरझाये पत्तों का नयापन, नए फूल लगना और आषाढ़ में घने काले बादलों का बरस जाना यह सब कवि-मन को प्रेरित करते हैं। ऋतुओं का यह चक्र किसानों के लिए और भी महत्वपूर्ण होता है। उनका जीवन ही मौसमों के सही होने न होने पर निर्भर करता है। समय पर वर्षा और वसंत का आगमन किसानों के लिए आनंद का आगमन होता है। वहीं बाढ़, भूकंप, तूफान जैसी प्राकृतिक विपदाएं हानिकारक हो जाती हैं। भवानी प्रसाद मिश्र की कविता आषाढ़ और किसान के संबंध को सुसंगत ढंग से कहती है :

हे मेघ पुंजीभूत, हे जलधार,
हे तड़ित, हे वेग, हे विस्तार,
हे पथिक के दूत, अक्षय-प्यार
हे मिलन, हे विरह, हे अभिसार
कभी विद्युत्-से कभी सुरचाप से
कभी केकी कंठ और कलाप से,
कृषक के आनंदमय संगीत.से,

विरह स्थित से
कि मिलन अतीत-से।"6

मानव की प्रकृति पर निर्भरता हमेशा से रही लेकिन दुनिया जैसेजैसे आधुनिकता की ओर बढ़ती गई वैसे-वैसे मानव प्रकृति से दूर हो गया है। मानव ने विकास के नए कीर्तिमान तो तय किये हैं लेकिन इस प्रक्रिया में वह प्रकृति को नुकसान पहुंचाता रहा है। विकास के चलते उसके लिए प्रकृति प्रमुख नहीं रह गई है। आधुनिक युग में औधोगिकीकरण ने वातावरण को जड़ों से चरमरा दिया। औधोगिक क्रांति के बाद वैश्विक तापमान में तेजी से वृद्धि हुई है जिससे आने वाली पीढ़ीयों के लिए सबसे बड़ी समस्या भू-मंडलीय उष्मीकरण की हो गई है।

भवानी प्रसाद मिश्र ने उस दौर को भी देखा जब औद्योगिकरण भारत में बड़े पैमाने पर नहीं फैला था। औद्योगिकीकरण के पहले नदियां स्वच्छ थीं, बड़े भू-भाग में वन फैले हुए थे प्रायः सभी को शुद्ध हवा उपलब्ध थी। औद्योगिकीकरण जैसे ही पैर पसारने लगा तो लाभ के साथ हानियाँ भी होने लगी। धीरे-धीरे वन समाप्त होने लगे, नदियों का पानी दूषित होने लगा, जिसका खेती

पर प्रभाव पड़ा, शुद्ध हवा मिलना मुश्किल हो गया। यह सब देख कर कवि का संवेदनशील मन व्यथित होता है। वह विकास के साथ पीछे होने वाले विनाश की ओर हमारी दृष्टि ले जाते हुए कहते हैं :

हम प्रकृति से टूट गए हैं
जिस डाली को पकड़े थे हमारे हाथ
उससे हमारे हाथ छूट गए हैं
और अब हम
एक गति में हैं
ज्यादातर लोग समझ रहे हैं
हम प्रगति में हैं 7

भवानी प्रसाद मिश्र अपनी व्यथा कविताओं के माध्यम से कहते हुए चाहते हैं कि हम इस सच को समझे कि अपनी स्वार्थपरता के चलते हमने प्रकृति को कितनी हानि पंहुचाई है। साथ ही हम स्वयं को भी कितनी हानि पंहुचा रहे हैं। "आदमी पागलपन में वनों को उजाड़े जा रहा है, वह जानता ही नहीं है कि ये वन न रहेंगे तो हम भी नहीं रहेंगे। सरकार भी इस ओर उदासीन है, एक पागलपन आ गया है, जिसमें प्रकृति से अलगाव आ रहा है। प्रकृति के अलगाव की पीड़ा को हम झेल रहे हैं।"8 भवानी प्रसाद मिश्र अपनी कविता में भूमि के सूखे बंजरपने की समस्या की बात करते हैं। वनों के कम होने से उनके आसपास विचरण करते और उन पर घोसले बना कर रहने वाले पंछियों की दुर्दशा देख कर दुःखी होते हैं और कहते हैं कि :

कहीं नहीं बचे हरे वृक्ष
ना ठीक सागर बचे हैं
ना ठीक नदियाँ
पहाड़ उदास हैं और
झरने लगभग चुप
आखों में घिरता है अँधेरा घुप
आसमान में चक्कर काटते
पंछियों के दल नजर नहीं आते
क्योंकि बनाते थे वे जिन पर घोंसले
वे वृक्ष कट चुके है या सुख चुके हैं
क्या जाने अधूरे और बंजर हम 9

भवानी प्रसाद मिश्र का कवि मन प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर आह्लादित होता है तो उसकी दुर्दशा देखकर दुःखी भी होता है। वह प्रकृति की एक ही धुरी को दृष्टी में रखकर कविता नहीं लिखते। उनकी कविता में कहीं निराशा दिखती है तो आशा के स्वर भी उठते हैं। आशा के छणों में उनकी कविताओं में रंग-बिरंगे फूल खिलने लगते हैं। प्रकृति के नित नयेपन के जैसी ही कविताएं नये आयाम लेने लगती है। उत्साह उनके शब्दों में दिखता है। आशा से भरकर ही उन्होंने लिखा कि :

चलो ले कर, एक नव आशा
नयी इच्छाए नया उत्साह
इसलिए हम चलें,
सावन में संभाले खेत अपने,
बिखेर दें बो दें उगा दें,
आज उनमे नये सपने,
ये कि जब फागुन सजीला
फूल.से सपने खिला दे,
गा उठें इस जोर से,
आवाज जगती को गुँजा दे।10

निष्कर्ष

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएं हिंदी साहित्य में चली आ रही प्रकृति की महत्ता या काव्य में उसके प्रभाव को बराबर बनाए रखती है। उनके शब्दों में प्रकृति की जीवंत चेतना का बहाव है। प्राकृतिक भाव-बोध के वर्णन में उनका कवि अदभुत पकड़ रखता है। एक ओर जहां वह प्रकृति के सौन्दर्य, उसके हमारे जीवन से गहन

संबंध को दर्शाता है तो दूसरी ओर वह प्रकृति के विनाशक रूप को भी उतनी ही तत्परता से दर्शाता है। किसी एक पहलू को ही लेकर उन्हें प्रेरणा हुई ऐसा नहीं है। प्रकृति के सरल, अलौकिक, आदर्श और भयंकर सभी रूप उनकी कविताओं में है। साथ ही मानव विकास के कुछ ऐसे अंग जिन्होंने प्रकृति को नुकसान पहुँचाया है का भी उल्लेख करता है। प्रकृति में संचरित रागात्मकता उनके काव्य में मिलती है। उनकी रचनाएं बताती है कि मानव जीवन और प्रकृति का विकास समानांतर चलने वाली सतत प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में प्रकृति का ध्यान रखना हमारे स्वयं के जीवन का ध्यान रखने जैसा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 महादेवी वर्मा, नीरजा, 2010, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

2 नामवर सिंह छायावाद, 23वां संस्करण 2021, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली

3 विजय बहादुर सिंह मेरे साक्षात्कार, 2013, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली

4 भवानी प्रसाद मिश्र, गीत-फ़रोश, 1953, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद

5 विजय बहादुर सिंह मेरे साक्षात्कार, 2013, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली

6 भवानी प्रसाद मिश्र, गीत-फ़रोश, 1953, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद

7 भवानी प्रसाद मिश्र, परिवर्तन, 2018, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता

8 विजय बहादुर सिंह मेरे साक्षात्कार, 2013, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली

9 भवानी प्रसाद मिश्र, परिवर्तन, 2018, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता

10 भवानी प्रसाद मिश्र, गीत-फ़रोश, 1953, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद